dit with WPS Office

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

कृषि और भारतीय किसान

सपना रानी

शोध छात्रा (पीएच.डी.)

हिन्दी विभाग

जम्मू विष्वविद्यालय,जम्मू कश्मीर

जम्मू - 180006

संरचनात्मक दृष्टि से भारत एक कृषि प्रदान देष है। सभी ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है। इसी कारण हमारे देष को कृषि प्रदान देष की संज्ञा दी गई है। भारतीय आबादी का 70 प्रतिषत भाग गाँवों में ही निवास करता है और इस तरह से कृषि को यहाँ के निवासियों की आजीविका का महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है। परन्तु, यहाँ यह प्रष्न विचारणीय है कि क्या भारतीय किसान खेती के माध्यम से अपनी और अपने परिवार की जयरतों को पूरा कर पा रहा है? यदि कृषि के प्राचीन इतिहास की बात की जाए तो कहा जा सकता है कि - "ग्राम का उदय इतिहास में कृषि अर्थ व्यवस्था के उदय के साथ जुड़ा हुआ है। ग्राम के अर्विभाव ने यह प्रदर्षित कर दिया है कि मनुष्य ने सामूहिक जीवन के भ्रमणषील ढंग से निकलकर स्थिर रूप से एक ही स्थान पर निवास करने के ढंग को अपना लिया। इसका मौलिक कारण उत्पादन के औजारों में सुधार था। जिससे कृषि की उन्नति हुई और इसलिए एक सुनिष्चित प्रादेषिक भाग में स्थिर रूप से निवास करने की संभावना और आवष्यकता का अनुभव हुआ।"

मनुष्य अब भ्रमणषील जीवन जीने की बजाय एक ही स्थान पर रहकर खेती करने लगा। "इस प्रकार एक ऐसे कृषक समुदाय का प्रादुर्भाव हुआ जिनका स्थायी निवास ग्रामों में और कृषि जिनका मुख्य धन्धा था। इस घटना ने मानव इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना उपस्थित कर दी और सामाजिक जीवन का उच्चतर रूप हमारे सामने आया।"

यदि आज भारतीय कृषि की दषा की ओर ध्यान दिया जाए तो भारतीय कृषि अर्थ व्यवस्था इस समय घोर संकट कालीन दषा में है और इसकी पुष्टि ग्रामीण जनों की असहनीय आर्थिक दुर्गति से होती है और यही कारण है कि किसानों की पारिवारिक स्थिति दयनीय हो गई है।

"भारत के आष्चर्यजनक रूप से प्रचुर प्राकृतिक साधनों, उसकी उपजाऊ तथा विभिन्नतापूर्ण भूमि, उसके खनिज भण्डार, उसकी विषाल जनसंख्या के होते हुए भारत की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पत्नोन्मुख हो रही है, उसकी कृषक जनता निर्धनता तथा विपिŸा के पाष में बंधी हुई है, उसकी कृषि भयंकर गति से गिरती चली जा रही है।"

किसानों और कृषि की गिरती स्थिति के कारणों को ढूँढ पाना कठिन कार्य नहीं है। पुराने समय से लेकर आज तक कृषकों का अनेक प्रकार से शोषण किया जाता रहा है जिससे वह निर्धनता की स्थिति तक पहुँच रहे हैं। सामन्तीय भू-स्वामी, ग्रामीण सूदखोर, साहूकार, पूँजीवादी वर्ग आदि विभिन्न प्रकार से किसानों का शोषण करते आए हैं जो आज भी जारी है।

ब्रिटिष साम्राज्यवाद के समय में जमींदारी प्रथा के अन्तर्गत रहने वाले भारतीय किसानों का शोषण बढ़ी ही तीव्र गति से होता रहा।

एक निर्धन कृषक जो न केवल भूमि से होने वाली आय का बहुत बड़ा भाग राज्य को देता था बल्कि शक्कर, नमक तथा

 Copyright • 2020 Authors

dit with WPS Office

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

सामान्य उपभोग के अन्य पदार्थों पर लगे करों को भी सहता था। अब के भारत में भी किसानों की कर्ज की स्थिति वैसी ही है जैसी ब्रिटिष राज्य के समय में थी।

ऋण की समस्या किसानों के जीवन से इस प्रकार जुड़ी हुई है कि बढ़ती हुई निर्धनता उन्हें अधिक से अधिक श्रण लेने के लिए विवष कर देती है।

समृद्ध प्राकृतिक साधनों, उपजाऊ भूमि आदि के होते हुए भी किसान इतना निर्धन क्यों है? किसानों और कृषि की गिरती स्थिति के कारणों में - "कृषि सम्बन्धी तकनीक का निम्न स्तर, भूमि का अत्यधिक उपविभाजन तथा खंडीकरण, राज्य की कार्य करने तथा न करने सम्बन्धी त्रुटियां और इन सबसे ऊपर कृषक जनता का वंषक्रमागत रूप से एकत्रित असहनीय तथा गला घोंटने वाला ऋण का भार है।"

ऋण की इसी समस्या के कारण आज भारतीय किसान आत्महत्या करने को विवष है। बहुत कुछ सीमा तक भारत में किसान न तो मुनाफा प्राप्त करने के लिए खेती कर रहा है न कुछ अन्य चीज़ प्राप्त करने के लिए बल्कि, केवल अपने और अपने परिवार के भरण पोषण के लिए ही परिश्रम करता है और जब इतनी मेहनत के बाद भी अपने परिवार को पालने में सक्षम नहीं है तो वह आत्महत्या की ओर बढ़ता चला जा रहा है।

किसान की ऋण की समस्या को समझने के लिए प्रेमचन्द की 'सवा सेर गेहूँ' कहानी को लिया जा सकता है। गोदान उपन्यास में भी उन्होंने किसान जीवन की समस्याओं का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है।

"पूँजीवाद आरम्भिक दौर से ही किसानों का दुष्मन रहा है। अपने स्वार्थ के लिए वह किसानों को आत्महत्या की स्थिति तक पहुँचा देता है।"

आधुनिक समय में भी किसान को कभी सरकार की नीतियों का लाभ न मिल पाने के कारण तो कभी पूँजीपति द्वारा शोषण के कारण विषमताओं का सामना करना पड़ रहा है। भारत में हर दिन किसानों की आत्महत्या के समाचार सुनने को मिल रहे हैं। 1995 से लेकर 2010 तक के वर्षों की ओर ध्यान दिया जाए तो यह आंकड़ा दिन-व-दिन बढ़ता जा रहा है।

"1995 में 10720 किसानों ने आत्महत्या की तो 2010 में 15960 किसानों ने 1995 से 2000 तक के वर्ष वही हैं जिनमें देष में नव उदारवादी आर्थिक नीति लागू की गई।"

सबसे ज्यादा आत्महत्याएँ वहाँ पर होना जहाँ सबसे पहले हरित क्रांति आई बहुत ही आष्चर्य की बात है। "हरित क्रांति के नाम पर पंजाब में रासायनिक खादों और कीटनाषकों का बहुतायत से प्रयोग, जमीनी जल का दोहन अनियंत्रित बना दिया गया लिहाजा ज़मीन बंजर होने की कगार पर जा पहुँची है।"

महाराष्ट्र कर्नाटक मध्यप्रदेष और छतीसगढ़ ऐसे ही प्रदेष हैं जहाँ सबसे पहले हरित क्रांति हुई पिछले बीस वर्षों में जितनी किसान आत्महत्याएँ हुई हैं वह पूरे मानव जीवन के इतिहास में अपूर्व हैं।

2010 के बीच 2.5 लाख से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है, कारपोरेट हितैषी आर्थिक नीतियों का ढिंढोरा पीटते रहे। कृषि संकट की भयावहता समझने के बजाय आक्सफोर्ड पढ़े हमारे रहनुमा खैरात बांटू योजनाओं के सहारे गांवों को रिझाने, मनरेगा, मिड-डे-मील जैसी परजीवी बनाने की रणनीति बताते रहे।"

वर्तमान विकास की नीति के केन्द्र में खेती किसानी की अपेक्षा, किसानों और किसानी को हेय दर्षाने की संस्कृति है।

"कृषि मंत्री ने राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एन.सी.आर.बी.) के हवाले से संसद के शीतकालीन सत्र (19 दिसम्बर 2011) में स्वीकार्य किया है कि वर्ष 2010 में 26 राज्यों के 15000 किसानों ने आत्महत्या की है।"

पिछले कुछ वर्षों से, अनेकों समूहों ने खेती की गिती हुई स्थिति में नसुधार लाने के लिए तथा समृद्ध ग्रामीण क्षेत्र के स्वप्नों को साकार करने हेतु अनेकों कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया।

 Copyright • 2020 Authors

dit with WPS Office

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

"कृषक जनता के अनेकों हितैषियों - सरकार, सुधारवादी संगठन जैसे 'सर्वेन्टस आफ इण्डिया एण्ड पीपुल्स सोसाइटिज, 'हौली क्रिष्चियन मिष्नरी' तथा भारतीय जनता का विष्वासनीय मित्र 'गांधी' के नेतृत्व में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' आदि अनेकों संगठनां ने कृषि समस्या का समाधान करने का भरसक प्रयास किया परन्तु समस्या ने समस्त संसाधनों को निरर्थक बना दिया।"

सरकार द्वारा किसानों की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक वायदे किये जाते हैं परन्तु वास्तविकता में उनकी स्थिति जस-की -तस बनी हुई है। सरकार द्वारा किसानों के लिए ऐसी योजनाओं का निर्माण करना चाहिए जिनका लाभ उन्हें वास्तविकता में पहुँच सके।

विडम्बना की बात तो यह है कि हमारे समाज के अधिकतर लोग किसानों के जीवन की त्रासदी से अवगत ही नहीं हैं क्योंकि जिस प्रकार मीडिया द्वारा अन्य समस्याओं को जनता के सामने लाया जाता है वैसे किसानों की नहीं।

अतः साहित्य में भी किसानों की त्रासदी को स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि किसान वह है जो सम्पूर्ण संसार के लिए अन्न जुटाता है लेकिन स्वयं के परिवार के लिए भोजन जुटाने में वह असमर्थ होता जा रहा है। सरकार को किसानों के गिरते हुए स्तर को रोकने की आवष्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

भारतीय ग्रामीण - समाज शास्त्र - ए. आर. देसाई

भारत के किसान विद्रोह (1850-1900) - एल. नटराजन

किसान जीवन का यथार्थ : एक फोकस (कथादेष), मई 2012

भारतीय समाज में प्रतिषोध की परम्परा - मैनेजर पाण्डे

सपना रानी

शोध छात्रा (पीएच.डी.)

हिन्दी विभाग

जम्मू विष्वविद्यालय

जम्मू - 180006

 Copyright • 2020 Authors